Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAJASTHAN

सब-इंस्पेक्टर

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

पेपर – 2

भाग - 1

इतिहास, कला – संस्कृति (भारत एवं राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. प्रागैतिहासिक काल 1
2. सिन्धु घाटी सभ्यता 3
3. वैदिक काल 9
4. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म 16
5. महाजनपद काल एवं मगध 23
6. ईसा पू. के विदेशी आक्रमण 25
7. मौर्यकाल 26
8. मौर्योत्तर काल 32
9. गुप्तकाल 35
10. गुप्तोतर काल 41
11. संगम काल 42
12. चोल वंश 46

मध्यकालीन भारत

13. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (अरब, तुर्क, अफगान) 49
14. सल्तनत काल 51
15. मुगल काल 63
16. संगम वंश (विजयनगर) 79
17. प्रमुख दक्कन के साम्राज्य 82
18. धार्मिक सामाजिक सुधार आन्दोलन 84
19. मराठा उत्कर्ष 89

आधुनिक भारत का इतिहास

20. यूरोपीयन शक्तियों का भारत आगमन 91
21. उत्तरकालीन मुगल सम्राट 94
22. बंगाल और अंग्रेज 95
23. आंग्ल मराठा संघर्ष 97
24. देशी राज्यों के प्रति अंग्रेजों की नीति 105

25.कुटीर उद्योगों का पतन एवं भू राजस्व नीतियां 106
26.अंग्रेजों के न्यायिक सुधार 109
27.भारत में अंग्रेजों की आर्थिक नीति 110
28.आंग्ल-मैसूर संघर्ष 112
29.सिक्ख आंग्ल संघर्ष 112
30.गवर्नर जनरल 114
31.भारत के गवर्नर जनरल 116
32.भारत के वायसराय 118
33.1857 की क्रान्ति 121
34.भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह 124
35.किसान आन्दोलन 127
36.धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन 128
37.राष्ट्रीय आन्दोलन 134

(प्रमुख अधिनियमन, आन्दोलन, नेतृत्वकृता एवं संगठन)

38.भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन 156
39.भारत में साम्यवादी आन्दोलन 159
40.भारत में समाजवाद 160
41.महत्वपूर्ण प्रेस एक्ट का विकास 161
42.प्रमुख व्यक्तित्व 164
43.कम्पनी द्वारा लाए गए एक्ट 165
44.साम्यवादी मुकदमें एवं आजाद हिन्द फौज 166

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

45.राजस्थान का परिचय 168
46.राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं 170
47.राजस्थान के प्रमुख राजवंश एंव विशेषताएं 175
48.1857 की क्रान्ति एवं राजस्थान 210
49.राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन 212
50.राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन 214
51.राजस्थान का एकीकरण 218
52.राजस्थान के प्रमुख त्यौहार 222

53.राजस्थान के लोकदेवता एवं देवीयाँ 229
54.राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 235
55.राजस्थान के लोकगीत एवं गायन शैलीयां 239
56.राजस्थान के लोकनृत्य एवं लोक नाट्य 241
57.राजस्थान की जनजातियां 246
58.राजस्थान की चित्रकला 249
59.राजस्थान की हस्तकलाएं 252
60.राजस्थान का भाषा एवं साहित्य 254
61.महत्वपूर्ण किले एंव स्मारक 260
62.जिले एवं धार्मिक स्थल 267
63.राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 269
64.राजस्थान में प्रथम 272
65.आभूषण, वेश भूषा, खानपान 273

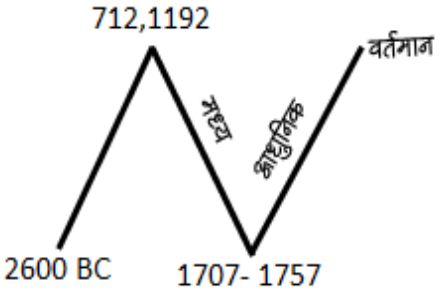

कालक्रम

1. 2600 BC – 1900 BC
   सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900 BC – 1500 BC
   ----
3. 500 BC – 1000 BC
   ऋग्वैदिक काल
4. 1000 BC – 600 BC
   उत्तरवैदिक काल
5. 600 BC – 321 BC
   महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321 BC – 184 BC
   मौर्य काल
7. 184 BC – 321 AD
   मौर्योत्तर काल
8. 319 AD – 550 AD
   गुप्तकाल
9. 606 AD – 647 AD
   हर्षवर्द्धन
10. 750 AD – 1000 AD
    राजपूत काल
11. 1192 (1206) – 1526 AD
    सल्तनत काल
12. 1526 AD – 1707 (1858)
    मुगल काल
13. 1707 (1757) – वर्तमान
    आधुनिक काल

प्राचीन काल में भारत

इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्य स्त्रोत
3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते हैं-

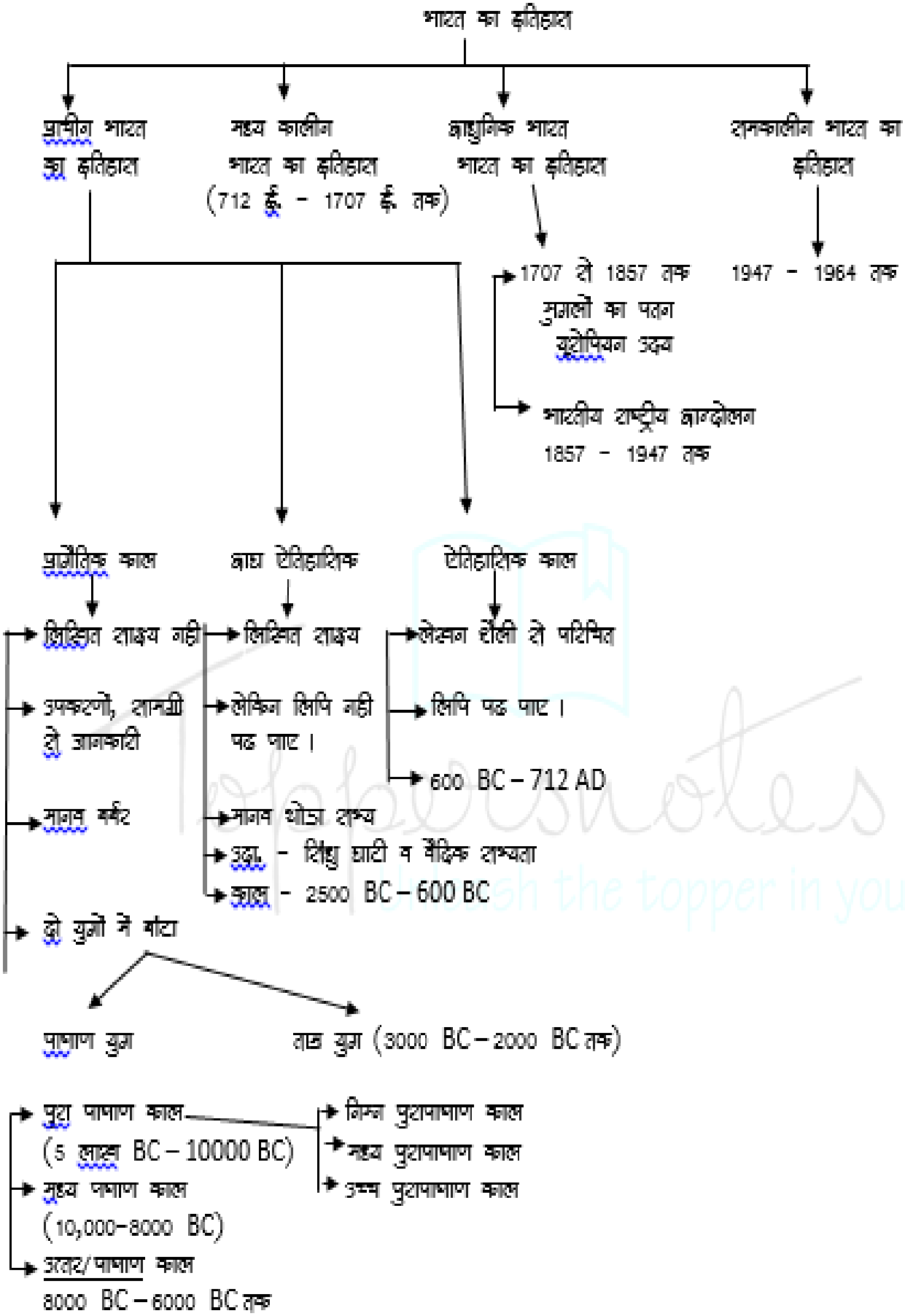

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पुरापाषाण काल –

- कौर संस्कृति, फलक संस्कृति एवं ब्लैड संस्कृति का उदय ।
- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर-चौपिंग एवं हैण्ड डैक्स संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध
डीडवाना (राजस्थान)
– हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- इस मध्यपाषाण काल को संक्रमण काल कहा जाता हे ।
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को "नव पाषाणिक क्रांति" कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बुजहोम एवं गुपफकराल (J&K) बुजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –
प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होने लिंगसुगुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे ।

नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- परिचय
- विस्तार
- कालक्रम
- निवासी
- नगर नियोजन
- महत्वपूर्ण नगर
- लिपि
- पतन
- अन्य महत्वूर्ण तथ्य

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रर्थम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।

सिंधु घाटी सभ्यता –

- 1922 में रखाल दास बर्नजी ने इस मोहनजोदडो की खोज की ।
- इस सभ्यता के स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे थे । अतः इस घाटी का नाम सिंधु घाटी सभ्यात पडा ।

सरस्वती नदी घाटी सभ्यता –

- आजादी के बाद खोजे गए सर्वाधिक स्थल इस नदी क्षेत्र में है । अतः इसका नाम सरस्वती नदी घाटी सभ्यता भी कहा जाने लगा है ।

कास्य युगीन सभ्यता –

- उत्खनन में कंस्य के बर्तन या उपकरण अधिक मिले ।

नगरीय सभ्यता –

- सिंधु घाटी सभ्यता एक विस्तृत एवं समृद्ध नगरीय सभ्यता है । यहां बडे – बडे नगरों का उदय हुआ था ।

विस्तार –

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- भारत

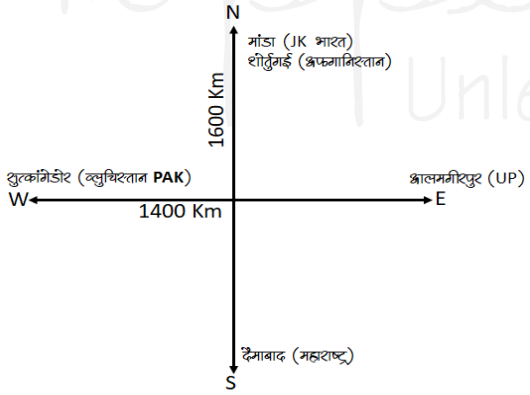

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । शार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- शार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है ।
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

कालक्रम –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC
अर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

निवासी –

यहां से प्राप्त कंकालों के आधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।

कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
ईंट का आकार – 1 : 2 : 4

जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी । विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पाः –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते है ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –

(a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
(b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
(c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।
(ix)योगी की मूर्ति मिली है ।
(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।
(xi)बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।
(xii)सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
  (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटनुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

9 कालीबंगा:- अवस्थिति- हनुमानगढ

नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग

उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल बी. के. थापर जे. पी. जोशी एम. डी. खरे

शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)

उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईटों के मकान ।

सामग्री:-

→ सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।

→ युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।

→ एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो घन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।

→ जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों ।

→ मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी ।

→ जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।

→ ईटों को धूप से पकाया जाता था ।

→ वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।

→ लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।

→ यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।

→ यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।

→ यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।

→ यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।
→ यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
→ इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
→ यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।
→ अन्य सामग्री:- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदि:
→ 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है।

नोट:- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

10कुनाल (HR)

- चाँदी के दो मुकुट

12रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

11रोपड (PB)

- मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य ।

12. दैमाबाद

- रथ मिले है ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

राजनीतिक व्यवस्था: -

ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी --- ।

आर्थिक व्यवस्था -

कृषि

- खेती व्यवस्था - प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले है । एक साथ दो - दो फसल बोने के साक्ष्य मिले है (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते है । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँआ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते है - शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले है । सम्भवत: नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते है।

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरो पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती है ।

उद्योग

- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते है । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- लकडी के कारखाने भी थे ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे ।

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते है ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती है ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, योनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी – डैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थितिः –

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागों मे विभाजित था –
  - (i) पुरोहित वर्ग
  - (ii) व्यापारी वर्ग
  - (iii) किसान वर्ग
  - (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्रा मे मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।
- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा मे हथियार मिलते है ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था –
  - (i) पूर्ण शवाधान
  - (ii) आंशिक शवाधान
  - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे ।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापारः –

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते है ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते है ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते है ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते है ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरेः –

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती है –
  1. धातु की
  2. पत्थर की

3. मिट्टी की (टेराकोटा)

- मोहनजोदड़ो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदड़ों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई है ।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदड़ों व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती है ।
- (II) कूबड वाला सांड के चित्र

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

निष्कर्ष

हडप्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रहीं । अंततः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒ साहित्य
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
साहित्य का अंग नहीं है ।
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक

वेद -

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है ।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों की रचना आर्यो ने की ।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था ।
- वेद 4 है -

1. ऋग्वेद -

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।
  - गायत्री मंत्र सविता / सावित्र (सूर्य) को समर्पित है ।
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है ।
  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था ।

- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम भुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :-

- यह 2 भागों में है - (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ - अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद - धनुर्वेद

3. सामवेद :-

- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :-

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि - रचयिता
- अन्य नाम - अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने - टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र - मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला - ब्रह्म
- उपवेद - शिल्पवेद ।

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तेतरेय ब्राह्मण

सामवेद - 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य -

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये ।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य -

- इनकी संख्या 108 है ।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है ।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है ।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् -

1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है
   इसमे कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है ।

2. छान्दोग्य उपनिषद् -

- इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है ।
- भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा आंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है ।
- बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है ।

3. वृहदारण्यक उपनिषद् -

- सबसे लम्बा उपनिषद्
- इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है ।

4. जाबाल उपनिषद् –
   - चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है ।

5. ऐतरेय उपनिषद् –
   बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

6. मुण्डकोपनिषद् –
   "सत्यमेव जयते"

वेद	कर्म मार्ग – जैमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण	प्रभाकर व कुमारिल भट्ट
आरण्यक	ज्ञान मार्ग – बादरायण – उत्तर मीमांसा दर्शन
उपनिषद्	ब्रह्मसूत्र

- शंकराचार्य – अद्वैत
- रामानुज – विशिष्ट अद्वैत
- निम्बार्काचार्य – द्वैत – अद्वैत
- वल्लभाचार्य – शुद्ध अद्वैत
- माध्वाचार्य – द्वैत

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उनिषद ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्राह्मण्क	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	शाकल बालखिल्य वाश्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरैय मां,ायन	तैतरैय मंत्रायन वृहदारण्यक	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतशश्वर, ईश
सामवेद	कौथूम, शाणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविष, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

वेदांग –
वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है –

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छन्द – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीन पुस्तक है ।

पुराण – संख्या – 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया ।

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
  इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है ।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।
  "बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- शुंग व सातवाहन वंश के समय इसकी रचना हुई ।

टीकाकार = भारूची
कुल्लक भट्ट
मेधातिथी गोविन्दराज

याज्ञवल्क्य स्मृतिः – टीकाकार = विश्वरूप विज्ञानेश्वर अपरार्क

नारदस्मृतिः – इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है ।

कात्यायनः – इसमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है ।

ऋग्वैदिक काल उत्तरवैदिक काल
(1500 – 1000**BC**)
(1000 – 600**BC**)

ऋग्वैदिक काल (1500 – 1000 **BC**)

- आर्य का शाब्दिक अर्थ – भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
- आर्यो का निवास स्थान –
  (i) बाल गंगाधर तिलक –
    (i) "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज"
    (ii) "गीता रहस्य"

आर्यिऑन / ऑर्योन

इस पुस्तक मे उत्तरी ध्रुव को आर्यो का निवास स्थान बताया ।
(ii) दयानन्द सरस्वती – तिब्बत को आर्यो का स्थान बताया ।
(iii) डॉ. पेन्का – जर्मनी को बताया ।
(iv) मेक्स म्युलर – मध्य एशिया – बैक्ट्रिया
सर्वाधिक मान्य मत

आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।

सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

आर्यो का भौगोलिक विस्तार :–

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार "मुजवन्त"
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "मुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- सोम का निवास स्थान – भुजवन्त
- पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है ।
  झेलम – वितस्ता, चिनाब – अस्किनी, सतलज – शतुद्री, व्यास – बिपाशा, रावी – पुरूषणी
- अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख
-

वर्तमान नाम	ऋग्ववैदिक नाम
सिंधु	सिंधु
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपाशा
सतलज	शतुद्री
चीनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	स्वास्तु
कुर्रम	कुर्मु
काबुल	कुम्भा

- नोट– गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।

आर्यो की राजनैतिक स्थिति :–

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था ।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था ।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था ।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था ।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- अधिकतर लडाईयाँ जानवरों (गायों व घोडा) के लिए लडी जाती थी ।
- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी –

(1) <u>विदथ</u> –
- प्राचीनतम संस्था
- यह धन का बँटवारा करती थी (लूट)

(2) <u>सभा</u> –
- वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
- ऋग्वेद मे 8 बार इसका उल्लेख किया गया है

(3) <u>समिति</u> –
- जनप्रतिनिधियों का समूह
- ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है ।
- स्पश = गुप्तचर
- राजा की सहायता हेतु 12 मन्त्री होते थे जिन्हे रत्निन (रत्नि) कहा जाता था ।
- ब्राजपतिः – गोचर भूमि का प्रमुख
- बलिः – राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर
- राजनैतिक इकाईयाँ –

(1) जन – गोप
(2) विश – विशपति
(3) ग्राम – ग्रामणी
(4) कुल – कुलुप

- महिलाएँ भी सभा मे हिस्सा लेती थी ।

आर्थिक जीवन –

- आय का स्त्रोत/ प्रमुख पेशा – पशुपालन
- गाय व घोडा – प्रिय पशु
- कृषि (स्थायी कृषि) नहीं करते थे । ऋग्वेद मे कृषि का उल्लेख 3 बार मिलता है ।
- मुद्रा प्रणाली नहीं । वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
- मुद्रा के रूप मे गाय व निस्क का प्रयोग । (प्रारम्भ मे आभूषण)
- अयस शब्द – संभवतः ताँबे या काँसे के लिए / लोहे से परिचित नहीं
- कपास का उल्लेख नहीं

सामाजिक जीवन

- पितृसतात्मक संयुक्त परिवार
- समाज 3 वर्णो मे विभक्त – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- शुद्रो का अस्तित्व नहीं था ।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल मे पुरूष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख । लेकिन यह बाद में जोडा गया था ।
- वर्ण व्यवस्था – कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था ।
- महिलाओं को सभा व समिति मे हिस्सा लेने का अधिकार था ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था ।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों का रचना भी की थी ।
- कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति
- "विषपला" नामक योद्धा महिला का उल्लेख ।
- जो महिलाएँ अविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हे "अमाजु" कहा जाता था ।
- बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन ।
- विधवा विवाह होता था ।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था ।
- "नियोग प्रथा" का प्रचलन था ।
- दहेज को "वहतु" कहते थे ।
- घरेलु दास होते थे ।
- विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओ से, वैश्य जाँघो से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए है ।
- आर्यो के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते है ।
- भिष्ज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था ।

धार्मिक जीवन :–

- आर्य बहुदेववाद मे आस्था रखते थे । सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे ।
- मूर्तिपूजा नहीं करते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते है ।
- सबसे प्रमुख देवता – इन्द्र
  ऋग्वेद मे 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है । इन्द्र को "पुरन्दर" कहा ।
- 'अग्नि' दूसरा प्रमुख माना जाता था ।
- अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था ।
- वरूण – तीसरा प्रमुख देवता । वरूण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है ।
  ऋत – इस जगत् की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है ।
- पुषन – पशुओं के देवता को कहा जाता था । (पूषण)
- यज्ञ अनुष्ठान होते थे ।
- धार्मिक कर्मकाण्डो का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था ।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
- सोम का पेय पदार्थ को देवता माना । ऋग्वेद के 9वें मण्डल में ।

प्रा. बहुदेववाद
↓
बहुदेववाद
↓
एकेश्वरवाद
↓
सर्वेश्वरवाद (अद्वैतवाद)

हीनोथिज्म – किसी स्थान विशेष पर विशेष समय एवं परिस्थितियों के कोई एक देवता प्रमुख एवं अन्य देवी–देवता गौण हो जाते है ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :–

- क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय प्रारम्भ ।
- राजा का पद पहले की अपेक्षा अधिक गौरवशाली हो गया था ।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।

(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता

(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था ।

इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।

(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे । राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विदथ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- पांचाल – कबीला – प्रदेश – सर्वाधिक विकसित राज्य
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :–

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिड्डियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे ।
- अधिशेष उत्पादन होने लगा । (लौहा – खेत)
- अन उत्पादक वर्ग – ब्राह्मण व क्षत्रिय

उत्पादक वर्ग – वैश्य व शुद्र :–

- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है ।व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- स्वर्ण व लौहे के अलावा टिन, तांबा, चांदी व सीसा से भी परिचित हो गये थे ।
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :–

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था ।
  आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते है) उपनयन संस्कार होता था
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी ।
  (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।